IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 3, Issue 1, March 2020

दलित आंदोलन और डॉ. अंबेडकर की विरासत: एक ऐतिहासिक एवं वैचारिक अध्ययन

डॉ. रजत गंगवार
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उ०प्र०
rajat gangwar4289@gmail.com

शोध सारांश

भारत को प्रायः विविधताओं का देश कहा जाता है। यहाँ भाषायी, धार्मिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक स्तर पर व्यापक विविधता विद्यमान है। यह विविधता भारतीय सभ्यता की समृद्धि और बहुलतावादी परंपरा का प्रतीक मानी जाती है, किंतु इस बहुरंभारतीय समाज की संरचना में जाति-व्यवस्था ने सदियों तक असमानता, बहिष्कार और सामाजिक विभाजन को बनाए रखा। इस व्यवस्था के कारण समाज का एक बड़ा वर्ग, जिसे आज 'दलित' के रूप में जाना जाता है, सामाजिक सम्मान, शिक्षा, आर्थिक अवसरों और राजनीतिक अधिकारों से वंचित रहा। इस ऐतिहासिक अन्याय के विरुद्ध जो संघर्ष धीरे-धीरे विकसित हुआ, वही आगे चलकर दलित आंदोलन के रूप में स्थापित हुआ। इस आंदोलन को वैचारिक स्पष्टता, राजनीतिक दिशा और संवैधानिक आधार प्रदान करने में डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रही।

डॉ. अंबेडकर ने दलित समाज को केवल शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा नहीं दी, बल्कि उन्हें आत्मसम्मान, शिक्षा, संगठन, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करने का व्यावहारिक मार्ग भी दिखाया। उन्होंने दलित प्रश्न को दया या सुधार के विषय के रूप में नहीं, बल्कि अधिकार, नागरिकता और मानव गरिमा के प्रश्न के रूप में प्रस्तुत किया। यह शोध-पत्र दलित आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, डॉ. अंबेडकर के सामाजिक-राजनीतिक योगदान, स्वतंत्रता,उत्तर भारत में उनकी विरासत तथा समकालीन दलित विमर्श में उनकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि डॉ. अंबेडकर की विरासत केवल संविधान-निर्माता या दलित नेता तक सीमित नहीं है, बल्कि वे आधुनिक भारत में सामाजिक लोकतंत्र, समानता और न्याय के सबसे प्रखर चिंतक हैं।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in